माह का आलेख

मनुष्य हमेशा संकट में था

ऐसा कोई क्षण ही नहीं रहा मनुष्य के इतिहास में जब संकट न हो। अगर तुम संकटों को ही देखते रहो तो बुद्धों का पैदा होना बंद हो जाएगा। बुद्ध के समय में संकट नहीं था? बहुत संकट था। राजनीतिज्ञ तो ऐसी व्याख्या करते हैं कि बुद्ध घर छोड़ कर गए ही इसलिए कि बुद्ध के राज्य में और पड़ोसी राज्य में संघर्ष था। कहीं झंझट में न उतरना पड़े, इसलिए वे चुपचाप घर से निकल गए। राजनीतिज्ञों की व्याख्या बुद्ध की यही है।

संकट कब नहीं था?

जीसस के समय में संकट न था? यहूदी गुलाम थे। रोमन राज्य था। उचित तो यह हुआ होता कि जीसस भी देश-प्रेमियों में सम्मिलित हो गए होते। भजन का एकतारा फेंक दिया होता, और राजनीति की बंदूक उठा ली होती। छाती छेदने लगते। हृदय के गीत गाने बंद कर दिए होते। तो तुम्हें एक सैनिक और मिल जाता, एक पागल और मिल जाता। लेकिन पागलों कि तुम्हें वैसे ही क्या कमी है? इस एक पागल से और कुछ तुम्हारी संख्या न बढ़ जाती। लेकिन जीसस अपना एकतारा बजाते रहे। बुद्ध अपना एकतारा बजाते रहे।

मीरा के समय में संकट न था? मुसलमान मुल्क पर छाए थे, कब्जा उन्होंने कर लिया था। हिंदू धर्म संकट में था और मीरा भगवत-भजन के गीत गाती, नाचती रही।

देशद्रोही मालूम पड़ते हैं ये सब लोग। जब भी, जब भी संकट है तभी अपना भजन गाते हैं।

तुम थोड़ा सोचो, संकट कब नहीं था। आदमी जैसा है, संकट सदा रहेगा ही। ऐसे आदमी का संकट ही बना रहेगा। ऐसा आदमी संकट के बाहर हो नहीं सकता। अगर इस संकट को देख कर ही कोई चलता रहे, तो तो फिर इस संकट के बाहर जाने का कोई उपाय नहीं है। इस संकट के बाहर जाने का उपाय उस एकतारे की धुन को सुन लेना है। तुम्हारी भीड़, तुम्हारे बाजार के पास ही कोई एकतारा बजाए चला जाता है, वह संकट के बाहर है।

मैं तुमसे कहता हूं, मैं संकट के बाहर हूं, आपात स्थिति के बाहर हूं। तुम मुझे हथकड़ियों में बांध कर काल कोठरी में डाल दो, तो भी मैं तुम्हारी

हथकड़ियों के बाहर हूं। तुम मेरी गर्दन को काट दो तो भी मैं तुम्हारी हत्या के बाहर हूं। तुमने अगर मेरे एकतारे को सुना, तुम भी बाहर हो जाओगे। उस एकतारे की धुन को सुन कर चल पड़ना ही बाहर हो जाने का उपाय है। अगर तुमने कहा कि पहले संकट को निपटा लेने दो; पहले आपात स्थिति को टल जाने दो; पहले सारी दुनिया ठीक हो जाए, फिर हम भी चाहते हैं बजाएं यह गीत और नाचें और मीरा की तरह और चैतन्य की तरह प्रसन्न हों; पर ठहरो, अभी बहुत सी चीजें उलझी हैं, इनको सुलझा लेने दो। क्या तुम सोचते हो, ऐसी कोई घड़ी आएगी जिस दिन तुम सुलझा पाओगे? क्या सुलझाना तुम्हारे हाथ के भीतर है? तुम उलझे ही उलझे मर जाओगे। तुम सोच लो। उलझे ही उलझे मर जाना हो, उलझे ही उलझे मर जाओ। लेकिन इस भ्रांति में मत रहो कि तुम सुलझा कर किसी दिन, फिर उस एकतारे को सुनोगे जो परमात्मा का है। तो तुम गलती में हो। तो यह कभी भी न होगा।

जिसे जाना है बाहर, उसे आज जाना होगा। आज के अतिरिक्त और कहीं मार्ग नहीं है। इस क्षण उसे जागना होगा। क्योंकि क्षण-क्षण हाथ से बीते चले जाते हैं....

और मैं तुमसे कहता हूं, अगर तुम बाहर हो गए तो जगत का एक बहुत बड़ा बहुमूल्य हिस्सा बाहर हुआ। तुम भीतर थे तब तुम ना-कुछ थे, भीड़ के हिस्से थे, सोए हुए लोगों का एक अंग थे। जब तुम बाहर हुए तो तुम जागरण का हिस्सा हुए; तुम एक बहुत महत्वपूर्ण घटना घट गए। और तुम्हारे जागरण की छाया दूसरों पर पड़ेगी।

एक जागा हुआ आदमी हजारों को जगा सकता है, लाखों को जगा सकता है। तुमने भी अगर एकतारा उठा लिया और लोगों को जगाने लगे तो शायद कुछ और लोग आपात की स्थिति के बाहर आ जाएं।

तो दो उपाय हैं। एक तो यह है कि पहले सारा संकट मिट जाए, दुनिया में समाजवाद आ जाए, समता हो जाए, सारे लोग सुखी हो जाएं, कोई बीमारी न रहे, कोई भूखा न रहे, कोई युद्ध न रहे, सारा रामराज्य हो जाए, तब तुम परमात्मा का एकतारा उठाओगे। तब मैं सोचता हूं, तुम्हें अनंतकाल तक प्रतीक्षा करनी होगी। फिर भी आश्वासन नहीं दे सकता कि तब भी तुम उठा पाओगे।

दूसरा रास्ता है कि तुम अभी बाहर हो जाओ। तुम गीत गाना शुरू का दो। शायद तुम्हारे गीत को सुन कर और सोए हुए लोग भी कुछ जाग जाएं, बाहर आ जाएं।

इस OSHO टॉक को पढ़ना जारी रखने के लिए, देखें: ओशो, अकथ कहानी प्रेम की # 6

OSHO

© 2021 OSHO International
Copyright & Trademark Information